



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा



परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	
2	5	20	
3	10	21	
4	1 1/2	22	
5	1 1/2	23	
6	1 1/2	24	
7	1 1/2	25	
8	1 1/2	26	
9	1 1/2	27	
10	1 1/2	28	
11	1 1/2	29	
12	1 1/2	30	
13	1 1/2	31	
14	3	योग	56
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	56	छप्पन
18	4		



नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी ☒ अंग्रेजी ☐

विषय जीव विज्ञान

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 28/02/2026

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर जीति भाइया

संकेतांक 37816

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 181/2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर-पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:-
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कैल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस-पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

1.

(i) (अ) कैला

(ii) (ब) वैजसनीरिया

(iii) (स) आँकमी टोपीन

(iv) (अ) युष्मैटीन

(v) (अ) डीब्रीज, कॉरेंस व खैरमाक

(vi) (ब) टर्नर सिंड्रोम

(vii) (ब) 350

(viii) (अ) उत्पादक

(ix) (स) बीष

(x) (अ) तुंगिका

(xi) (द) मरजीवीना

(xii) (स) उल्टा

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

~~(xi)~~~~(xii) (द) क्षयरोग~~~~(xiv) (अ) आशुतम~~~~(xv) (द) राजनीति~~~~(xvi) (अ) पी. फाल्गुनी~~~~(xvii) (द) मुद्रा~~~~(xviii) (द) प्रजाति~~

1. 1. 2.

~~(i) कॉर्पोरेट व्यवस्था (पी. ए. ई.)~~~~(ii) प्रेम विप्लव~~~~(iii) अमृतम~~~~(iv) सौकरमाइलीन सौकरिनी~~~~(v) एडिनीलीन एडिनी इलमाइनीन (AIDA)~~

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(vi) एपिड्रोपन(vii) प्रतिबंधन एंडोन्यूक्लीएस(viii) सखनअ(ix) आँसूकारी जैव विकास(x) 650-800 CC

3.

i)

अववैधन है- विकासशील स्तन की एम्ब्रिऑन गुहा से एम्ब्रियोनोटिक इव निकालकर एम्ब्रियोन उसका परीक्षण करना, अववैधन कहलाता है। अंशलि स्तन के लिंग निर्धारण व आनुवंशिक विकारों के जाँच करने की विधि।

ii)

बलाइनफेल्डर सिंड्रोम है- इस आनुवंशिक विकार का मुख्य कारण X क्रोमोसोम के आलीरिक्ल प्रतिलिपि के न आने के कारण होता है जिससे केन्द्र में 44 XXY हो जाते हैं।

→ इसे व्यक्ति समग्र रूप से पुंस्थान होते हैं, परन्तु मादा लक्षण व्यक्त करते हैं।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

iii) ट्राइकोइमा कवक का उपयोग मादम रोगों के उपचार में किया जाता है।

iv) मीलवाडेगाइन इनकोगानीया सूतकृमी तंगायू के पौधों की जड़ों को संक्रमित करती है।

v) आप्रवासन है- एक निश्चित समयावधि में किसी समाधि में बाहर से आए सदस्यों का जुड़ना, आप्रवासन कहलाता है।

vi) वर्णधिता में व्यक्ति लाल व हरे रंग में विभेद नहीं कर पाता है।

vii) टाइफॉइड ज्वर का रोगजनक है- सालमोनेला टाइफी

viii) सहजीवीता का उदाहरण है- आम की बगुआ पर आदिमादम के खस में उगने वाला आर्किड तथा व्हेल की पीठ पर आवास करने वाली वार्निकल।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

i) क्वार्ट-1 इसी तथा क्वार्ट-II एबीजीकामास के मुख्य कामों को नियंत्रित करने के लिए प्रोटीन्स जीव द्वारा कूटबाह्य होते हैं।

x) परिपक्व शुणकोष - A $\Rightarrow$ ध्रुवीय केन्द्रक ।
B $\Rightarrow$ अण्ड कोशिका ।

1x10 = 10

खाण्ड - 6

4. परजीविता :- ऐसी पारस्परिक क्रिया जिसमें एक जानी को लाभ होता है तथा दूसरी जानी को हानि होती है, परजीविता पारस्परिक क्रिया कहलाती है।

उदाहरण :- मानव पर अमाश्वीत जूँ, ये बाह्य परजीवी होते हैं।

$\rightarrow$ कुत्तों पर चिंचाईयाँ ।

$\rightarrow$ परजीविता पारस्परिक क्रिया में परजीवी को लाभ तथा परपोषी को हानि होती है।

$\rightarrow$ परजीवी दो प्रकार के होते हैं :- i) बाह्य परजीवी ।
ii) अंतः परजीवी ।

$\rightarrow$ परपोषी की बाहरी सतह पर अमाश्वीत परजीवी बाह्य परजीवी तथा परपोषी के आंतरिक अंगों में अमाश्वीत परजीवी अंतः परजीवी कहलाते हैं।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

5. व्यस्थाने संरक्षण :- इस संरक्षण को अलग-थलग जीवों को प्राकृतिक आवास में रखा जाता है अर्थात् प्राकृतिक आवासों में संरक्षित जीव ।

- व्यस्थाने संरक्षण संपूर्ण पारितंत्र को संरक्षित रखता है ।
- यदि किसी जाती का संरक्षण व्यस्थाने संरक्षण में किया जाता है तो उससे संबंधित जाती का भी संरक्षण हो जाता है ।

1 1/2

उदा० :- i) जैव विविधता के हॉट-स्पॉट

ii) वन्य जीव अभयारण्य

iii) राष्ट्रीय उद्यान

- वर्तमान में भारत में 106 राष्ट्रीय उद्यान हैं ।

6. मधुमक्खी में लिंग निर्धारण :-

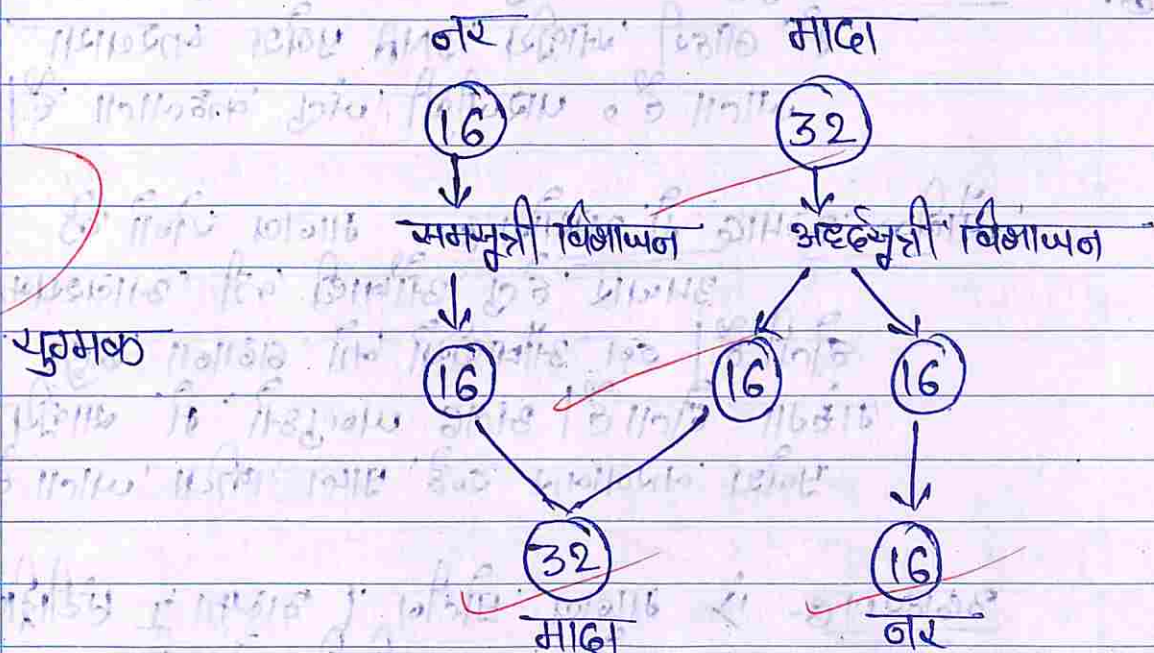
मधुमक्खी में लिंग निर्धारण प्रायः उस मधुम में उमास्थित क्रोमोसोम संमुख्य की संख्या पर निर्भर करता है ।

- आनीषकाजनन द्वारा, अनिषीकित अंड से नर मधुम (पुंमधुम) बनता है ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

- एक अंड तथा एक शुक्राणु के निषेचन से एक मादा मधुम (रानी या शार्मिक मधुम) का निर्माण होता है।
- मादा मधुम द्विगुणित (2n) होती है अतः इसमें सम अष्टसूत्री विभाजन होता है।
- पुंमधुम अगुणित (n) होता है अतः इसमें समसूत्री विभाजन होता है।
- अतः यह अगुणता-द्विगुणता लिंग विधारण प्रणाली कहलाती है।



7. संवाहक में नखीनिंग करने हेतु औरि स्थल का होना आवश्यक होता है क्योंकि यह ऐसा स्थल होता है जहाँ मधु प्राक्वहारीयन का प्रारम्भ होता है।

→ यह एक विशिष्ट अनुक्रम होता है जहाँ DNA खण्ड जुड़ता है।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

तथा प्रातिकृतियन का प्रारम्भ करता है।

→ यह परमोष्ठी में DNA खण्ड को प्रातिकृतियन पर नियंत्रण का भी कार्य करता है।

→ इसे प्रातिकृतियन का उद्गम स्थल कहते हैं।

छ. पारप्पीवी जंतु - वे जंतु जिनके आनुवंशिक महार्थ में बाहरी आश्रित DNA प्रवेश करवाया जाता है, पारप्पीवी जंतु कहलाता है।

औषिक उत्पाद में उपयोग - मानव रोगों के उपचार हेतु औषधी की आवश्यकता होती है। इन औषधियों को बनाना बहुत महंगा होता है। अतः जंतुओं में आश्रित DNA प्रवेश करवाकर उन्हें प्राप्त किया जाता है।

उदाहरण - i) मानव प्रोटीन (अल्फा I एंटीट्रिप्सिन) का उपयोग वाताश्रित को उपचार हेतु किया जाता है। इसके अतिरिक्त जैमर तथा जैमरिक फारमोसिस को उपचार हेतु भी उपयोगी है।

ii) 'रोसी' गाय के दूध द्वारा प्राप्त दुग्ध में लैक्ट एल्ब्यूमीन प्रोटीन पाया जाता था जो रोगों के माषक तत्वों को लक्ष्य आवश्यक है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

9. ढायोलोस्टीन ह- परमोषी कोशिका को पुनर्योग्य DNA
गुहण करने के लिए अर्थात् परमोषी कोशिका
पुनर्योग्य DNA को गुहण में सक्षम बनाने के
लिए उस विधि का उपयोग किया जाता है।

(1½) → जीनगन विधि में DNA में आवृत्त सीने या टंगस्टन के
सूक्ष्म कणों को उच्च वेग के साथ पादम कोशिका में
स्थानान्तरित करवाया जाता है।

10. जैव विविधता अक्षांशों के अनुसार बदलती है ह-

(1) सामान्य मध्य रेखा में ध्रुवों की ओर जाने पर
प्रजातियों की विविधता घटती है।

(2) उपकटिबंधीय क्षेत्रों (23.5° उत्तर से 23.5° दक्षिण) में
ध्रुवीय या समशीतोष्ण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक
प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसका कारण यहाँ की
सौर ऊर्जा की उपलब्धता तथा स्थिर पर्यावरण से है।

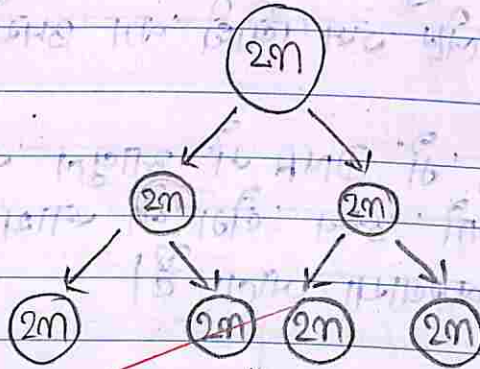
परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

अणुबलन की श्रृंखला आरेख

11.

आणुबलन का शीर्ष

गुणन प्रारम्भवृद्धि प्रारम्भ

वृद्धि

2m

प्रथम अणु का शीर्ष

अणुबलन - I

n

n

द्वितीय अणु का शीर्ष

परिपक्वन प्रारम्भ

अणुबलन - II

n

n

n

n

अणुबलन

अणुबलन

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

12. A) होमो हाबिलिस - मांस खनमानुष (होम) जैसे थे
B) होमो इरेक्टस -
C) ड्रायोपीथेकस -

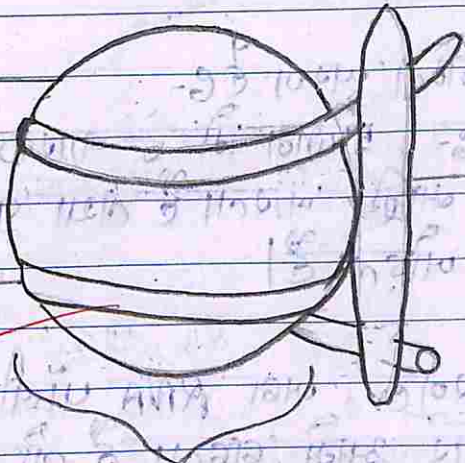
- 1/2 12. A) होमो हाबिलिस - मांस नहीं खाते थे।
1/2 B) होमो इरेक्टस - प्र संभवतः मांस खाते थे।
2/2 C) ड्रायोपीथेकस - मांस खनमानुष (होम) जैसे थे।

13.

हीस्टोन डब्बल

क्रोमोसोम

आवर्तन DNA

H₁ हिस्टोन

न्यूक्लियोसोम

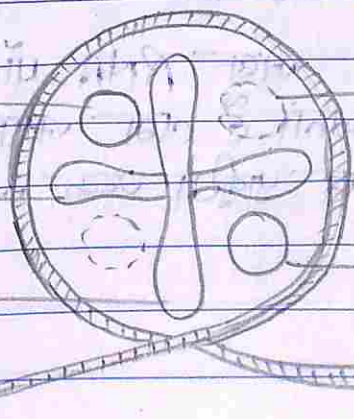
हीस्टोन अणु का आवरण

H₁ के दो

अणु

H₂ के दो

अणु



क्रोम

H₂A का अणु

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - स

14.

अनुलेखन - DNA से RNA के निर्माण की प्रक्रिया को अनुलेखन कहा जाता है। अनुलेखन में आनुवंशिक सूचनाओं का DNA से RNA की ओर स्थानांतरण होता है।

बैक्टीरिया में अनुलेखन प्रक्रिया -

बैक्टीरिया में एक ही RNA पॉलीमरेज पाया जाता है जो विभिन्न RNA (rRNA, tRNA, mRNA) को निर्माण करता है।

उसके निम्न चरण हैं -

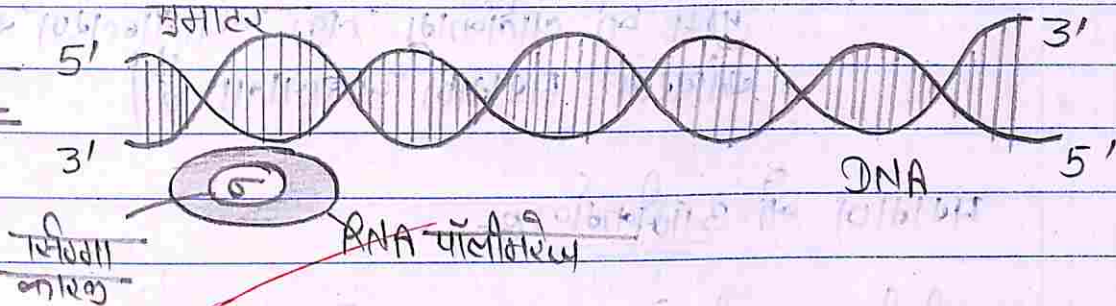
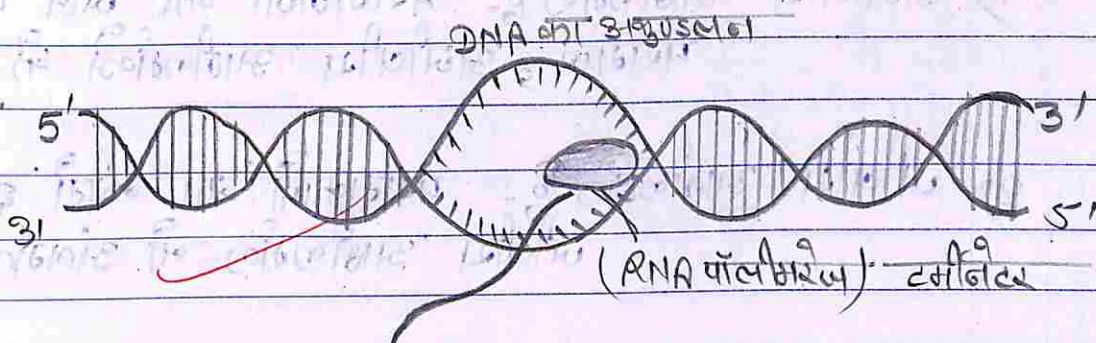
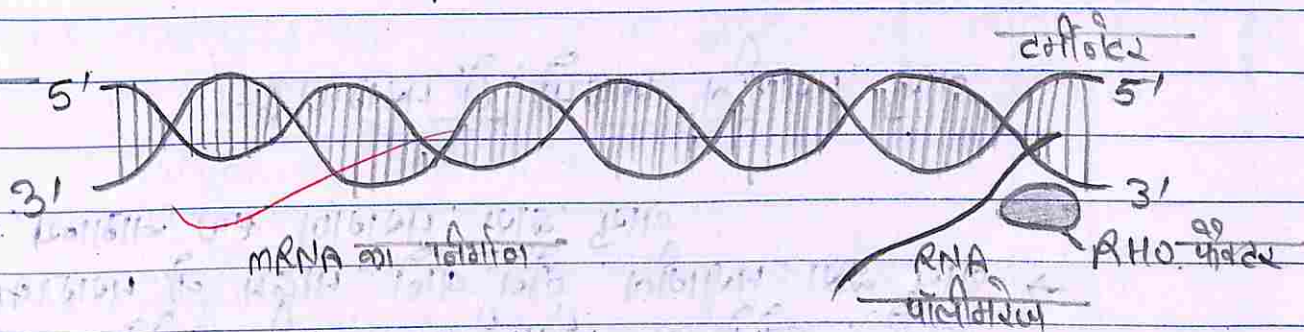
i) प्रारम्भ - प्रारम्भ में 6 कारक RNA पॉलीमरेज को सक्रिय करता है तथा DNA के प्रमोटर भाग से जोड़ता है।

ii) वैधीकरण - जब RNA पॉलीमरेज स्टैटोमलैट सम्पुल पर आगे बढ़ता है तो DNA का अनुप्लवन होता है तथा mRNA का निर्माण होता है।

iii) समापन - जब RNA पॉलीमरेज समापक क्षेत्र पर पहुँचता है तब समापन कोडोन की उपस्थिति में यह प्रक्रिया रुक जाती है।

प्रश्न
दत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

प्रारंभविघटनसमाप्तवैक्टीरिया अनुलेखन प्रक्रिया आरेख

(3)

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

15. परागण है- परागकों का परागकोष से अङ्गुली के पञ्चाल
मुक्त के वर्तिकाग्र तक स्थानान्तरण या
अन्वय परागण कहलाता है।

परागण के आन्तरिक है-

1) अजीवीय आन्तरिक है- परागकों का जल व वायु द्वारा
परागण, अजीवीय आन्तरिक के अंतर्गत होता है।

2) जीवीय आन्तरिक है- परागकों का कीटों द्वारा परागण,
जीवीय आन्तरिक के अंतर्गत होता है।

वायु परागित पादमों में परागण है-

→ वायु द्वारा परागित होने वाले पादमों के परागकोष
हल्के, छोटे व निम्नचिमाहट रहित होने चाहिए &
जिससे वे हवा के साथ अन्वयित हो सकें।

→ वायु द्वारा परागित होने वाले पुरुष प्राण्ड पिच्छ
वर्तिकाग्र मुक्त होते हैं, हवा के जोरों के साथ आसानी
से अन्वयित हो सके।

→ धासों में वायु द्वारा परागण होता है।

→ झुंडा (कॉर्नफ़ैव) में भी वायु परागण पाया जाता है।



16. वाहितमल छ- प्राणिदैन खाहरो व नगरो मे व्यर्थ जल
जानीत होला है। इस व्यर्थ जल का मुख्य
धटक मनुष्य का मल-मूत्र होला है,
इसे वाहितमल कहते है।

→ वाहितमल हमारे लिए हानिकारक है-

i) वाहितमल अमचार के पश्याल इसका पूर्ण खुददीकरण
व जोज आवश्यक है क्योंकि अमचार के पश्याल
वाहितमल को प्राकृतिक जल स्रोतो मे छोड़ा जाता है
जिससे यह मानव व पशुओ के दैनिक जीवन मे
काम आता है।

ii) वाहितमल का पूर्ण जम से अमचार नही किया गया है तो
यह मनुष्य मे घातक व्याख्या संबंधी बीमारिया
उत्पन्न कर सकता है।

2 iii) वाहितमल के अमचार मे सुक्ष्मजीव महत्वपूर्ण
भूमिका निभाते है। सुक्ष्मजीव कार्बोनीक पदार्थो का
अपघटन करते है तथा BOD (बायोलॉजिकल
ऑक्सीजन डिमांड) की मात्रा कम करते है। जिससे
जल कम प्रदूषित रहता है।

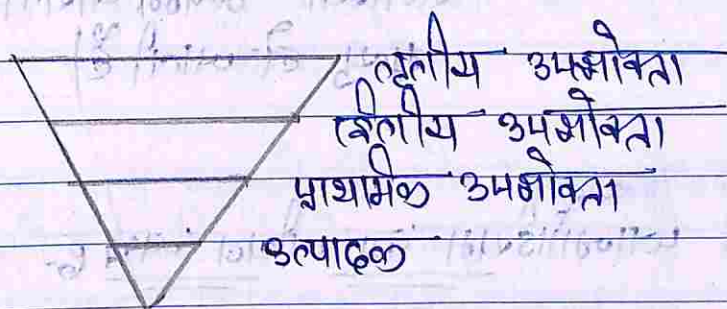
iv) वाहितमल का अमचार आवश्यक है क्योंकि पृथ्वी पर जल
की मात्रा कम है। अतः जल का पुनर्नियोग ही अनीत
अमर्या जाता है। मरुतु यह घातक भी हो सकता है।

3



iii) जलीय पारितंत्र के पिरामिड जैव भार के आधार पर
अच्छे होते हैं।

उदाहरण है- किसी जलीय पारितंत्र में मादमप्लवक की
संख्या कम होती है, उसे खाने वाले जलप्लवक
जैव भार की संख्या का जैव भार इससे अपेक्षाकृत
अधिक होता है। जलप्लवक से अपेक्षाकृत अधिक
जैव भार छोटी मछलियों का तथा इससे अधिक
बड़ी मछलियों का होता है।



उदा: प्राणीप्लवक → जलप्लवक → छोटी मछली → बड़ी
मछली

- जैव भार के बढ़ते क्रम को दर्शाया गया है।
- जैव संख्या के आधार पर ये पिरामिड खींचे होते हैं।

→ किसी पारितंत्र में विभिन्न खाद्य शृंखलाओं में पाए जाने वाले
विभिन्न पोषण स्तर पर जैव भार के आधार पर
अस्थायी प्रदर्शन, जैव भार के पिरामिड कहलाते हैं।

(4)

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

18. i) मलेरिया प्लाज्मोडियम नामक रोगजनक द्वारा होता है।
मलेरिया के लक्षण हैं-

1) मलेरिया 72 घंटों के भीतर तेज कामकाजी
होने के बाद ठंड के साथ बुखार आ जाता है।

2) मलेरिया के कारण व्यक्ति आरंभिक पीड़ा,
शकावट, कामजोरी से ग्रसित हो जाता है।

3) प्लाज्मोडियम की फैलीपेज जाती गंभीर
मलेरिया उत्पन्न करती है जिससे व्यक्ति की
मृत्यु हो जाती है।

ii) प्लाज्मोडियम का जीवन चक्र है-

प्लाज्मोडियम का जीवन चक्र दो परमोषी
पर निर्भर करता है।

1) मानव में, मनुष्य रक्त परमोषी होता है
जहाँ रक्त आरंभिक चक्र पूरा होता है।

2) मच्छर में, मादा एनाफेलीज द्वितीय परमोषी होता है
जहाँ रक्त अंतिम चक्र पूरा होता है।



प्रश्न संख्या
परीक्षार्थी उत्तर

व) संक्रमण है- जहां मादा एनाफ्लीज, मनुष्य को काटती है तो मादा के लार में उपस्थित स्पोरोजॉइट मनुष्य के रक्त में चला जाता है। ह. मादा एनाफ्लीज के मुख पर रक्त घातिकांदल प्राया जाता है अतः रक्त के थक्के नहीं पड़ते हैं।

ग) स्पोरोजॉइट है- यह प्लाज्मोडियम की संक्रामक अवस्था होती है। स्पोरोजॉइट रक्त में लगभग 30 मिनट तक रहता है फिर ये यकृत की कोशिकाओं पर आक्रमण करता है क्योंकि उनका मुख्य जीवन चक्र यकृत होता है।

→ अतः ये रक्त में चलाते हैं और RBC में उपस्थित Hb का अंदोलन करते हैं। जिसमें ये आकार में बड़े हो जाते हैं और ट्रिफोजॉइट बनते हैं। यह प्लाज्मोडियम की अग्रतः अवस्था होती है।

घ) Hb का अंदोलन है- ट्रिफोजॉइट Hb का आर्थल अंदोलन करती है तो इसमें अमीबा के समान कूटपाद बन जाते हैं तथा ट्रिफोजॉइट केन्द्र की परीधि पर आ जाता है।

→ अन्त में RBC को टूटने के साथ हिमेटिन काग भी टूट जाते हैं जिससे व्यापक संक्रामक हो जाता है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

Q) मादा हनाफलीज है। जब मादा हनाफलीज अंडाशय
व्याक्ती को काटती है तो स्पेरोप्लास्ट
मादा सच्छर के लार में अंडाशय हो जाता
है। अतः यह मादा हनाफलीज जब किसी
व्यक्ती को काटती है तो स्पेरोप्लास्ट
उसके रक्त में छोड़ देती है। जिससे यह
जन्म बलता रहता है।

4

11 अंशमात 11

8

BSER-18/2026



प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
---------------	-------------------



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSUEL-18/7/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2026

556

हृषीकेश

